

पुरु 7, 13, 70. अ 3, 14, 48. 22, 2. 10, 86, 18. 11, 20, 15. नाति 10, 81, 38. die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: स्त्रीषु KATHÁS. 47, 101. स्त्री 102. परस्त्री 0 BRAHMAVAIV. P. 2, 53, 30 (nach AUFRECHT). भोगलम्पटा (बिह्व) KATHÁS. 30, 117. प्रफुल्लमल्लीमधु 0 ŚĪH. D. 300, 21. अखिलकाम 0 BHĀG. P. 5, 18, 21. 19, 14. तरुन्धासव 0 10, 59, 40. PAÑĀR. 3, 5, 28. करिकोटिविपाटन 0 PĀRĀVANĀTHAK. 4, 189 (nach AUFR.). विपयर्सास्वाद् 0 SARVADARĀNAS. 101, 3. PAÑĀT. 253, 18. रति 0 geil Verz. d. B. H. No. 1006. Davon nom. abstr. 0 व नः भवर्सास्वाद्ने Spr. 23.

लम्पा f. N. pr. einer Stadt KATHÁS. 67, 36. 45. eines Reiches HIUEN-TSANG I, 95.

लम्पाक 1) adj. = लम्पट H. an. 3, 91. MED. k. 149. — 2) m. N. pr. eines Volkes, = मुराड H. 960. H. an. MED. MBH. 7, 4847. MĀRK. P. 57, 40. REINAUD, Mém. sur l'Inde 333. LIA. I, 29, N. 1. 422.

लम्पापट्ट m. eine Art Trommel, = प्रतिपत्तिपट्ट HĀR. 72. = ट्टरी H. an. 3, 559. MED. r. 160.

लम्फ m. Sprung ÇKDn. Auch उलम्फन und प्रलम्फन n. ebend. — Vgl. लम्प.

1. लम्ब (= älterem 1. रम्ब), लम्बते (विह्वसने) DHĀTUP. 10, 15. Nir. 6, 26. लम्बते, लम्बिष्यते, लम्बितुम्, लम्बित; aus metrischen Rücksichten auch act. 1) herabhängen, hängen an: प्रतृषी वैव तिष्ठेह्यम्बते वा ÇAT. Br. 11, 4, 32. युवानं निह्वते (so die ed. Bomb.) वीरं लम्बमानम् MBH. 6, 1879. 8, 55. 11, 186. R. 6, 84, 24. fg. 7, 34, 17. KATHÁS. 40, 102. PAÑĀT. V, 36. अवाक्किरास्तु यो लम्बेत् MBH. 13, 354. Spr. 4953. ऋषयो ह्यत्र (शाखायां) लम्बते MBH. 1, 1386. 1385 (act.). 12, 6597. R. 3, 39, 30. प्रपाते वं लम्बमानः MBH. 2, 2187. वृत्ताद्य लम्बति (न ह्यति MBH. 3, 15683) तथैव भगाः DRAUP. 6, 18. शमीवृक्षस्य लम्बमानशिखायाम् PAÑĀT. 94, 1. द्वेषप्रमाणानि लम्बमानानि — मधुनि मधुकरिभिः संभूतानि नगे नगे R. 2, 56, 8 (11 GORR.). R. GORR. 5, 74, 7. अग्निं लम्बते तु यत् (नेत्रम्) SUÇR. 2, 21, 2. अयथुर्मुक्त्वह्यम्बते गले 1, 289, 7. PAÑĀT. 136, 1. HIT. 49, 14. लम्बन्तं वृषणम् BHĀG. P. 9, 19, 10. लम्बता काठवर्मणा HARIV. 4103. लम्बमानाङ्घ्रि RĀGĀ-TAR. 1, 80. वानरस्य लम्बमानं लाङ्गूलम् PAÑĀT. 239, 7. लम्बमाना काठभूषा H. 657. स लम्बमानः कृत्स्नस्य भुजाये सधनो गिरिः HARIV. 3944. R. GORR. 1, 60, 8. KATHÁS. 40, 90. 63, 207. 73, 51. 55. RĀGĀ-TAR. 7, 1247. लम्बित herabhängend, hängend: बालशयन PAÑĀR. 3, 14, 12. लम्बितोष्ठ MBH. 13, 1201. लम्बितास्या R. 5, 25, 34. Verz. d. Oxf. H. 202, b, 8. 15. बडिशो ऽयं त्वया ग्रस्तः कालमूत्रेण लम्बितः hängend an MBH. 3, 11495. काठ 0 (यज्ञमूत्र) AK. 2, 7, 49. H. 843. — 2) herabsinken, sich senken: तेन लम्बामहे गर्ते MBH. 1, 1038. 1034. 1833. 3, 5559. गर्तमेतमनुप्राप्ता लम्बामः 8555. लम्बमानमिवाम्बुदम् HARIV. 3381. MEGH. 42. किमलम्बत (तमः) ÇIC. 9, 20. लम्बते च दिवाकरः MBH. 7, 5872. R. GORR. 1, 67, 27 (63, 34 SCHL.). लम्बमाने दिवाकरो 34, 28 (33, 20 SCHL.). 2, 54, 8. 3, 13, 5. शिरो मे लम्बते MBH. 6, 5728. शिरसा लम्बता 5722. लम्बित gesenkt, hinabgeglitten, abgefallen: तदधरचुम्बनलम्बितकञ्जलमुञ्ज्वलय प्रिय लोचने Git. 12, 19. — 3) sich hängen an so v. a. sich klammern —, sich halten an: पार्श्वतः पृष्ठतश्चापि लम्बमानास्तडुम्बुक्षाः R. 2, 40, 21. प्रूर्वाङ्गुषु लोका ऽयं लम्बते पुत्रवत्सदा MBH. 12, 3680. KĀM. NĪTIS. 13, 59. यो राशम्यु लम्बते so v. a. der die Zügel schiessen lässt Spr. 2433. लम्बित sich klammernd an, sich haltend an. gestützt auf: करेण वाता-

VI. Theil.

यनलम्बितेन RAGH. 13, 21. अन्योऽन्यलम्बितकरो ततस्तौ करिरान्तौ so v. a. Hand in Hand R. 7, 34, 43. कलकङ्कपालम्बितचन्दन hängen geblieben Verz. d. Oxf. H. 133, a, No. 244. — 4) zurückbleiben, nachbleiben (im Raume), sich langsamer bewegen SŪRIAS. 1, 25. — 5) nachbleiben (in der Zeit), zögern, säumen MBH. 5, 120. लम्बित = विलम्बित langsam, gemessen (von einem Tacte) BHĀGURI beim Schol. zu H. 292. — caus. 1) herabhängen lassen, herablassen: चर्मपेडा गवत्तेषां रज्ज्वा तत्र हि लम्ब्यते KATHÁS. 64, 100. aufhängen: चित्रपट्टं तत्र भित्तावलम्बयत् (so ist zu lesen, wie schon das Metrum zeigt) 122, 62. — 2) sich anklammern lassen: को लम्बयेदाकराण्य कस्तम् so v. a. die Hand anlegen RAGH. 6, 75. — 3) wohl demüthigen MBH. 1, 1445, wo die ed. Bomb. लम्बयित्वा st. लङ्गयित्वा liest.

— अव 1) herabhängen: य एष स्तन इवावलम्बते TAITT. UP. 1, 6, 1. स्तनवदवलम्बते यः काठे ऽज्ञानं मणिः स विज्ञेयः VARĀH. BRH. S. 63, 3. परागवलम्बमानकुटिलजटिलकपिशकेशभूरिभार BHĀG. P. 5, 3, 31. अवलम्बित herabhängend, hängend an: शाखायां मृतकामवलम्बितमास्ते VER. in LA. (III) 4, 2. 12, 12. Spr. 2774. ÇĀK. 144. PAÑĀT. 116, 23. 128, 9. — 2) herabsinken, sich senken: के भवतो ऽवलम्बते गर्ते कृष्मिन्धोमुखाः MBH. 1, 1035. 1834. सूर्ये ऽवलम्बति 4, 1040. अवलम्बित der sich herabgelassen —, niedergesetzt hat HIT. 13, 10. — 3) sich klammern —, sich halten an, sich stützen auf: mit acc.: सखीमवलम्ब्य स्थिता ÇĀK. 78, 8. उर्वशी राजानमवलम्बते VIKR. 10, 8. ÇIC. 9, 39. RAGH. 3, 23. दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः ÇĀK. 21, 1. शाखां वदतेरोः KATHÁS. 26, 17. 52, 327. मम पटमवलम्ब्य Spr. 1427. BHĀG. P. 5, 14, 40. 23, 3. अवलम्बमान anhängend SUÇR. 2, 373, 17. अवलम्बित gestützt auf AK. 3, 4, 117, 106. चित्रलेखाकस्तावलम्बिता VIKR. 7, 5. st. des acc. auch loc.: भूतं हित्वा च भाव्यर्थे यो ऽवलम्बते (ऽवलम्बेत ed. Bomb.) MBH. 1, 8443. auch instr.: ननु — नात्मना नावलम्बे ich finde ja meine Stütze in mir selbst MEGH. 108. — 4) fassen, anfassen, packen: कृस्ते ऽवलम्ब्य तम् KATHÁS. 121, 173. 63, 113. कृस्तेनावलम्ब्योर्वशीम् VIKR. 49, 11. अवलम्ब्यतो पुत्रः ÇĀK. 108, 19. अवलम्ब्यापराः काठे हरिम् HARIV. 8326. MRĀKĪH. 119, 14. KATHÁS. 37, 217. अवलम्बित gefasst SUÇR. 2, 336, 5. — 5) halten (damit Jmd oder Etwas nicht falle, sinke) ÇĀK. 86, 21. कृस्तेन तस्थायवलम्ब्य वामः RAGH. 7, 9. KUMĀRAS. 3, 55. 6, 68. 7, 58. MĀLAY. 47, 8. KATHÁS. 18, 298. undeig.: अमी गुणाः — कृदयं न त्वलम्बितुं क्षमाः RAGH. 8, 59. MĀLAY. 31, 2, v. l. अवलम्बित daran gehalten, darauf gelegt SUÇR. 1, 60, 11. — 6) zu Etwas greifen, sich hingeben: मायाम् BHĀG. P. 3, 31, 13. व्ययाम् BHATTI. 7, 71. आशाम् KATHÁS. 81, 57. प्राणीस्त्वत्प्राप्त्याशावलम्बितान् 106, 144. त्वया राजलमवलम्ब्यताम् so v. a. werde König R. 2, 72, 51. मानुष्यत्वमवलम्ब्य LA. (III) 87, 14. धैर्यम् Spr. 3633. VIKR. 34, 4. HIT. 13, 19. धैर्यमेकं सकायम् KATHÁS. 49, 253. धृतिम् 23, 298. स्वातन्त्र्यम् ÇĀK. 70, 14. दान्तिपयम् MĀLAY. 23, 22. निर्धयम् 69, 10. माध्यम्यम् KUMĀRAS. 1, 53. नैराश्यम् Spr. 1057. साकसम् Z. d. d. m. G. 14, 371, 17. theilhaftig werden: शौक्त्यम् VARĀH. BRH. S. 4, 3. अवालम्बिष्यत च्छन्नं कथं नु पुण्यपुण्यताम् (so ist zu lesen) RĀGĀ-TAR. 3, 65. obliegen: स्वानधिकारान्प्रभाविर्वलम्ब्य KUMĀRAS. 2, 18. — 7) nach einer best. Weltgegend greifen so v. a. eine best. Richtung einschlagen: प्रातिष्ठत ततः प्रातरवलम्ब्योत्तरो दिशम् KATHÁS. 37, 33, 52. — 8) abhän-

32\*

